P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतेन्दु के नाटकों में वर्ग–चिंतन (अंधेर नगरी और भारत दुर्दशा के संदर्भ में)

सारांश

भारतेंदु नवजागरण वादी थे और पुनरुत्थान वादी भी उनका प्रधान का नजरिया अतीतोन्मुख मध्ययुगीनता से आधुनिकता की ओर झुका नजर आता है वह सनातन धर्म की अंध हिंदू परंपराओं के खिलाफ थे हालांकि सनातन धर्म के प्रति उनकी आस्था अधिक भी विदेशी परंपराओं में परिवर्तन और बदलाव के पक्षधर थे उनका नवजागरण हिंदू नवजागरण उनको दोनों चिंतन पद्धतियों का उद्देश्य देशवासियों में सामाजिक सांस्कृतिक और राजनीतिक पराधीनता के विरुद्ध एक स्वस्थ भारत भाव पैदा करना था वे समस्त विरोधियों केके बीच सामाजिक चेतना की मिट्टी में बोनी की गहरी कूटनीतिक कोशिश कर रहे थे जो कहने को सांप्रदायिक भी कही जा सकती थी लेकिन थी नहीं भारतेंदु के नाटकों में हिंदूओं की सामाजिक सांस्कृतिक परंपराओं के राष्ट्रीयता की पहचान बनने के चिन्ह है ।

मुख्य शब्द : भारतेन्द, भूमंडलीकरण, सामाजिक सांस्कृतिक, उदारवाद, कृषि अर्थव्यवस्था, बाजार–मुक्त व्यवस्था ।

वसुन्धरा शर्मा
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
कर्नाटक केन्द्रीय
विश्वविद्यालय,
कर्नाटक, भारत

प्रस्तावना

जब अर्थव्यवस्था का रूपांतर होता है, अर्थात् वह प्राथमिक क्षेत्र से द्वितीय और तृतीय क्षेत्र में जाकर समाज की वर्ग संरचना का मौलिक रूपांतर होता है। अंग्रेजों के भारत आगमन से पूर्व भारतीय मूलतः ग्रामीण आत्म–निर्भर और कृषि पर आधारित थे इस प्रकार समाज की वर्गीय संरचना का एक वर्ग कृषि और उससे संबंधित विभिन्न उत्पादन कार्यों में लगा हुआ था, इससे इतर और सारे कार्य मूलतः कृषि अर्थव्यवस्था से ही जुड़े हुए थे, अंग्रेजों ने भारत में औद्योगिकरण का मशीनीकरण स्वरूप शुरू किया जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था चरमरा उठी परिमाणतः उन पर आधारित वर्ग–संरचना का ढाँचा में शून्य रह गया। विज्ञान तर्क और तकनीक पर आधारित यूरोपीय उपनिवेशवाद के कारण भारत में नए वर्ग सृजन के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई, परिमाणतः मध्यवर्ग का जन्म भारत में हुआ, जो यूरोपीय मूलक में एक शताब्दी पहले ही जन्म ले चुका था और भारत में उत्तर–आधुनिकता ने 90 के दशक आस–पास आया। भूमंडलीकरण, उत्तर–आधुनिकता, उदारवाद बाजार–मुक्त व्यवस्था उसकी शक्तियाँ है।

श्रीधर पाठक ने किया है–

''भीतर स्वाहा बाहर सादे। राज करहि अमले अरु व्यादे।।
अन्धा धुन्ध मच्यौ सब देसा। मानहुँ राजा रहत बिदेसा।।''[1]

वास्तव में भारतेन्दु हरिशचन्द्र आधुनिक युग के अग्रदूत थे, जिन्होंने हिन्दुस्तान को सही मायनों में आधुनिक होना सिखाया। भारतेन्दु की विचारधारा सामनज्य की थी, उन्होंने भारतीय विरासत को नकारा नहीं अपितु वह भारतीय पारंपरिक मूल्यों को साथ लेकर आधुनिकता के पोषक बने।

''रहे हमहुँ कबहूँ स्वाधीन आर्य्य बलधारी।
यह देहे जिय सो सबह बात बिसारी।।''[2]

भारतेन्दु के संपूर्ण नाटकों में वर्ग–चिंतन विशेष रूप से दिखाई देता क्योंकि वर्ग–चिंतन उनके नाटकों में मूल रूप से केन्द्र में था, उनकी दूरदर्शिता पारंपरिक रूढ़ियों से मुक्ति प्रदान कर भारतीय समाज को एक नए ढाँचे पर खड़ा करना था। अन्धेर नगरी नाटक में भारतेन्दु ने 'पूरब और पश्चिम के माध्यम से भारतेन्दु ने पूरी पश्चिमी भोगवादी संस्कृति का विरोध किया है। 'टके सेर' में बिक रहे सब समान को देखकर गोवर्धनदास चकित रह जाता है। और गोवर्धन दास उस बाजार के आकर्षण को देखकर पीछे चला जाता है। आकर्षण का भोग उसे अपनी ओर खींचता है। परन्तु अन्तु में गोवर्धनदास फँस जाता है। और अपने प्राणों को बचाने के लिए गुरु का स्मरण करता है, अन्धेर नगरी नाटक का

मुख्य उद्देश्य हिन्दुत्व की रक्षा व संस्कृति का संरक्षक खड़ा करने की है, इसके सामानतर में जहाँ भारतेन्दु ने एक ओर हिन्दू संस्कृति की रक्षा की वहीं दूसरी ओर पश्चिम की चमकीली, भोगवादी व्यवस्था को अन्धेर नगरी नाटक में भारतेन्दु ने पूरब और पश्चिम के माध्यम से पूरी पश्चिमी भोगवादी संस्कृति का विरोध किया है। ''टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिन्दू को क्रिस्तान। ''टके के टके के वास्ते झूठी गवाही दे। टके के वास्ते नीच को भी पितामह बताते। वेद, धर्म, मर्यादा, सच्चाई, बढ़ाई सब टक सेट लुटाय दिया। अनमोल माल, ले टैक सेर।''[3]

''भारत–दुर्दशा' के माध्यम से भारतेन्दु ने उस समय के तत्कालीन भारती समाज की यथार्थ परिस्थितियों का वर्णन किया है। और भारतीय समाज की जड़ता, निर्लज्जता, आशा, भारत दुर्देव, सत्यानाश, फौजदार, पात्र के माध्यम से समय की वास्तविक को उजागर किया है, जिसमें उस समय की कुरीतियों, बुराईयों के साथ जनता की कमियों और देश के प्रति उदासीन प्रवृत्ति को समझना है, नाटक का मूल उद्देश्य भारत की दुर्दशा का यथार्थ चित्रण है। 1857 की क्रान्ति के पश्चात् महारानी विक्टोरिया का शासन था।

किंतु इससे सामान्य वर्ग के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं आया। किसान और गरीब होते हुए। परिणामतः गरीब की इस मार के कारण अनादृष्टि से परेशान किसान अंग्रेजों, शोषण का भी शिकार बने।

भारत–दुर्देव के एक पात्र के माध्यम से उस समय के समाज की परिस्थिति का वर्णन है।

भारत–दुर्देव का संवाद

... कहाँ गया भारत मूर्ख। देखों तो अभी इसकी क्या दुर्दशा होती है, जिसको अभी भी परमेश्वर और राजराजेश्वरी का भरोसा है।

उपजा ईश्वर कोप से आया भारत बीच।
छार छार सब हिन्द करूँ मैं, तो उत्तम नहि नीच।
मरी बुलाऊँ देस उजाडू महँगा करके मन।
सबके ऊपर टिकस, लगान धन है।
मुझको धन्ना।''[4]

भारत–दुर्देव के माध्यम से हिन्दुस्तान को छिन्न–भिन्न करने का उद्देश्य उजागर होता है, वहीं दूसरी भारतेन्दु अंग्रेजों के वास्तविक राजनीतिक सत्य को समाज के सामने लाने का प्रयत्न करते हैं। जो उनके हृदय में राष्ट्र भक्ति, चेतना और भारतीय मूल्यों को दर्शाता है।

भले ही भारतीय समाज 1857 की क्रांति में विजय नहीं हुआ परन्तु राष्ट्रीय चेतना का जो प्रभाव सामान्य वर्ग के मानसिक पटल पर पड़ता वह सदैव स्मरणीय है। राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीय चेतना जैसी भावनाएँ क्रान्ति के पश्चात् उद्बुद्ध होने लगी जिसका चित्रण नाटक में मिलता है। योगी के द्वारा गाया गीत भारत के अतीत का गौरव, देश के गुणगान वर्णन मिलता है। साथ ही योगी के गीतों के माध्यम से तत्कालीन दुखद व मार्मिक स्थिति व उसके कारणों का उल्लेख करता है। 'राबहु सब मिलिकै आवहु भारत आई। हा हा! भारत दुर्दशा देखी न जाई।'' जैसी पंक्तियों के साथ वह अंग्रेजी शासक की कठोर नीति का उल्लेख करते हुए भारत की दुर्दशा का कारण स्पष्ट करता है।

अंग्रेज राज सुख–राज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति खवारी।
ताहू पै महँगी काल रोग विस्तारी।
दिन दिन दूने दुख ईस देत हा हारी।।
सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई।
हा हा! भारत दुर्दशा देखी न जाई।।''[5]

अध्यन के उद्देश्य

भारतेंदु के युग में वर्ग चिंतन का विशेष महत्व है जो आज भी वर्ग चिंतन के अध्ययन की दृष्टि से प्रासंगिक है ।

निष्कर्ष

जहाँ न धर्म्म न बुद्धि नाहिं नीति न सुजान समाज
ऐसाहि आपुहि नसै, जैसे चौपट राजा।।[6]

भारतेन्दु हरिशचन्द्र वास्तव में राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्माण के पक्षधर थे। आधुनिकता व भारतीय मूल्यों के बीच के वह पोषक थे, उन्होंने अपने नाटकों में सामाजिक कुरीतियों का विरोध राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक–पुनरुत्थान की बाह कही है। गोरक्षा, मांस–मदिरा का विरोध, अतीत के गौरवगान, चरित्रगत निर्माण पर बल देना उनके नाटकों का मूल उद्देश्य था।

अतः कहा जा सकता है। उत्तर–आधुनिकता के दौर में भी भारतेन्दु का वर्ग–चिन्तन प्रासंगिक व प्रामाणिक है जो भारतीय समाज में देश–प्रेम, आधुनिकता के तत्व समय–समय पर पोषित करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *भारतेन्दु हरिशचन्द्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, रामविलास शर्मा, पृष्ठ 121*
2. *वही, पृष्ठ 329*
3. *भारतेन्दु हरिशचन्द्र ग्रन्थावली, भाग 1, सं. ओमप्रकाश सिंह, अन्धेर नगरी, पृष्ठ 9*
4. *भारत दुर्दशा, भारतेन्दु, पृष्ठ 9*
5. *वही, पृष्ठ 4*
6. *भारतेन्दु ग्रन्थावली, पृष्ठ 158*